इमामहं वेद न तावकीं धियं विचित्ररूपा खलु चित्तवृत्तय:।

विचिन्तयन्त्या भवदापदं परां रुजन्ति चेत: प्रसभं ममाधय: ॥३७॥

अन्वय-

इमाम् तावकीं धियं अहं न वेद। चित्तवृत्तय: विचित्ररूपा: खलु। (किन्तु) परां भवदापदं विचिन्तयन्त्या: मम चेत: आधय: प्रसभं रुजन्ति ।।३७॥

अर्थ-

मैं (इतनी विपत्ति में भी आपको स्थिर रखनेवाली) आपकी बुद्धि को नहीं समझ पाती। मनुष्य-मनुष्य की चित्तवृत्ति अलग-अलग विचित्र होती है। आपकी इन भयङ्कर विपत्तियों को (तो) सोचते हुए (भी) मेरे चित्त को मनोव्यथाएँ अत्यन्त व्याकुल कर देती हैं ॥३७॥

टिप्पणी-

आप जिस विपत्ति को झेल रहे हैं वह तो देखने वालों को भी परेशान कर देती है, किन्तु आप है जो बिल्कुल निश्चिन्त और निष्क्रिय हैं। यह परम आश्चर्य है।

पुराऽधिरूढः शयनं महाधनं विबोध्यसे यः स्तुतिगीतिमङ्गलैः।

अदभ्रदर्भामधिशय्य स स्थलीं जहासि निद्रामशिवैः शिवारुतैः ॥३८॥

अन्वय-

यः महाधनं शयनं अधिरूढः (सन्) स्तुतिगीतिमङ्गलैः पुरा विबोध्यसे सः अदभ्रदर्भाम् स्थलीम् अधिशय्य अशिवैः शिवारुतैः निद्राम् जहासि ॥३८॥

अर्थ-

जो आप पहले अत्यन्त मूल्यवान शय्या पर सोकर स्तुति पाठ करनेवाले वैतालिकों के मंगल गान से जगाये जाते थे, वही आप अब कुशों से आकीर्ण वनस्थली मे शयन करते हुए अमंगल की सूचना देनेवाली शृंगालियों के रुदन शब्दों से निद्रा-त्याग करते हैं ॥३८॥

टिप्पणी-

तात्पर्य यह है कि भाइयों की विपदा ही क्यों आपकी भी तो दुर्दशा हो रही है। यहाँ विषम अलङ्कार है ।